आधुनिक काल में हास्य, व्यंग्य चित्रांकन

पूनम देवी
शोध छात्रा
मेरठ कॉलेज, मेरठ

डा0 (श्रीमति) अंजू चौधरी
शोध निर्देशिका, एसो0 प्रोफे0
मेरठ कॉलेज, मेरठ

Email: khushbuchauhanartist@gmail.com

सारांश

कला की एक शैली हास्यात्मक एंव व्यंग्यात्मक भी है। हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक अभिव्यंजना कला साहित्य का एक सशक्त माध्यम है और आदिकाल से रहा है। हास्य, व्यंग्य कला का मूल स्त्रोत हमारी हजारो बरस पुरानी संस्कृति और जीवन में देखा जा सकता है।

प्रस्तावना

हास्य, व्यंग्य कला का प्रादुर्भाव मानव स्वभाव और परिवेश के सामंजस्य से हुआ है। इसके अनके तत्व एवं मूल्य है। जो सार्वभौमिक, सतत एवं अभिव्यंजनात्मक है जो प्रागौतिहासिक काल में आखेट से सम्बन्धित चित्रों में सर्वप्रथम परिलक्षित होते है। इन चित्रों में पंचमढी (जम्बूदीप) में 'नृत्यवादन' चित्र, पंचमढी में दूसरा चित्र 'शहद एकचित्र करते हुए', भीमेटका में 'शिकार नृत्य', मिर्जापुर में सुअर का आखेट।[1] भीम बैठका की गुफा में पशु अंकन आदि। इनके अतिरिक्त अजन्ता गुफाओं में भी अनेक चित्रों में हास्य, व्यंग्य भाव की अनुभूति होती है। इन चित्रों में अजन्ता की गुफा संख्या 10 का एक चित्र है, जिसमें राजा अपनी दस रानीयों के साथ बोधिवृक्ष की पूजा करने जाता हुआ बनाया गया है। सभी रानीयॉ अर्धनग्न बनी है, दूसरा चित्र अजन्ता की गुफा सं0 17 का हाथियों का मिलन है।[2] अपभ्रंश शैली में अधिकांश चित्रों में हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है। अपभंश शैली के चित्रों में दोहरी ठुड्डी, मुडे हुए हाथ तथा ऐंठी उंगलियॉ, अप्राकृतिक रूप से उभरी हुई छाती, खिलौने की तरह पशु–पक्षियों का अलंकरण, नुकीली नाक, खाली जगह से निकली आंख आदि को हास्य, व्यग्य भाव स्पष्टतः परिलक्षित होता है।[3]

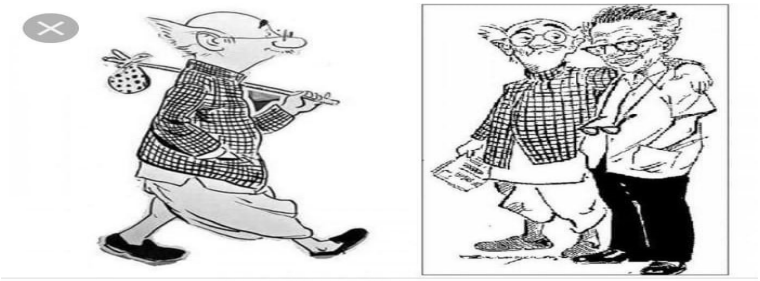

इसके साथ बाध, राजस्थान, मूगल व बंगाल शैली के चित्रों में भी कहीं न कहीं हास्य, व्यंग्य भाव की अनुभूमि होती है। इन चित्रों का विकसित रूप ही आज की आधुनिक हास्य, व्यंग्य कला में समाया है और पूर्ण रूप से ये चित्र हास्यात्मकता और व्यंग्यात्मकता का जीता–जागता उदाहरण है। हास्य, व्यंग्य कला जिसे अंग्रेजी में कार्टून कहा जाता है, एक ऐसी कला है, जिसने कला को एक नया मोड़ दे दिया है और इस कला में कार्य करने वाले कलाकरों को भरपूर ख्याति व सम्मान प्राप्त हो रहा है। विभिन्न प्रकार की कलाओं में हास्य, व्यंग्य कला ने अपना एक अलग व अनोखा स्थान बना लिया है जो विश्वभर में आकर्षण का विषय बना हुआ है। हास्य, व्यंग्य चित्रों के माध्यम से अनेक कलाकार विश्वप्रसिद्ध है जिनमें के0 शंकर पिल्लई (शंकर), आर0के0 लक्षमण, कुट्टी मेनन, मारियों मिराण्डा, आबू अब्राहम, केशव, रंगा आदि अनेक प्रसिद्ध कलाकार है जो हास्य, व्यंग्य कला के माध्यम से संघर्ष करते मानव को खुशी के कुछ पल जीने को प्रेरित कर रहे है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो हास्य, व्यंग्य कला मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण जगह बना रही है।

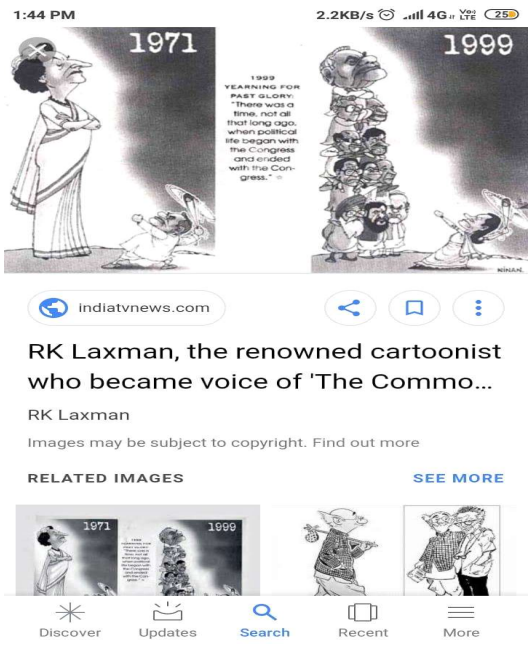

आधुनिक चित्रांकन, व्यंग्य कला, हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक कला, कार्टून सशक्त, पंचमढी, नृत्यवादन, भीमबेटका, शिकार नृत्य, आखेट, हास्य, व्यंग्य कला का पादुर्भाव, चत्रशैली, परिलक्षित, समकालीन हास्य, व्यंग्य कला में समाया, अत्यन्त विस्तृत संस्कृति और जीवन, अनोखा स्थान, आकर्षण, संघर्ष, प्रेरित, मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण जगह आदि। कला की एक शैली हास्यात्मक एवं व्यंग्यात्मक भी है। व्यंग्यात्मक, हास्यात्मक अभिव्यंजना कला अथवा साहित्य का एक सशक्त माध्यम है और आदिकाल से रहा है। हास्य, व्यंग्य कला का मूल स्त्रोत हमारी हजारो बरस पुरानी संस्कृति और

जीवन में देखा जा सकता है। हास्य, व्यंग्य कला एक ऐसी शैली का रूप है जिसमें कलाकार ऐसी कलाशैली को जन्म देती है जिनमें लगभग सभी मनुष्यों या दर्शकों के मन व मुख पर एक खुशी छलक उठती है और उस पल जब दर्शक उस कला का रसास्वदन करता है तो उसके मन की अनेक दुःख दुविधाएं धूमिल हो जाती है जिसमें अभिव्यक्ति और भी सशक्त हो जाती है तथा मनुश्य तनावमुक्त हो जाता है।

हास्य, व्यंग्य कला का प्रादुर्भाव मानव स्वभाव और परिवेश के सांमजस्य से हुआ है। इसके अनेक तत्व और मूल्य है जो सार्वभौमिक, सतत् एवं अभिव्यंजनात्मक है जो प्रागौतिहासिक कला में आखेट से सम्बन्धित चित्रों में सर्वप्रथम परिलक्षित होते है। इन चित्रों में पंचमढी (जम्बूद्वीप) मे 'नृत्यवादन' चित्र, पंचमढ़ी में दूसरा चित्र 'सुअर का आखेट आदि। अनेक ऐसे कई प्राचीन चित्र है, जिनमे पूर्णतय हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक भावना का आभास होता है।

इन चित्रों का विकसित रूप ही आज भी आधुनिक हास्य व्यंग्य कला में समाया है और पूर्ण रूप से ये चित्र हास्यात्मकता और व्यंग्यात्मकता का जीता–जागता उदाहरण है। हास्य, व्यंग्य कला जिसे अंग्रेजी में कार्टून कहा जाता है, एक ऐसी कला है जिसने कला को नया मोड दे दिया है और इस कला में कार्य करने वाले कलाकारों को भरपूर ख्याति व सम्मान प्राप्त हो रहा है, विभिन्न प्रकार की कलाओं में हास्य, व्यंग्य कला ने अपना एक अलग व अनोखा स्थान बना लिया है जो विश्वभर में आकर्षण का विषय बना हुआ है। हास्य, व्यंग्य चित्रों के माध्यम से अनेक कलाकार विश्वप्रसिद्ध है इनमें के0 शंकर पिल्लई (शंकर), आर. के0 लक्ष्मण, कुट्टी मेनन, रंगा मारियों मिराण्डा, आबू अब्राहम, केशव आदि अनेक प्रसिद्ध कलाकार है जो हास्य, व्यंग्य कला के माध्यम से संघर्ष करते मानव को खुशी के कुछ पल जीने को प्रेरित कर रहे है। यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो हास्य, व्यंग्य कला मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण जगह बना रही है।

अंग्रजी भाषा में हास्य, व्यंग्य को ''कार्टून'' कहा जाता है अंग्रेजी के जाने पहचाने शब्द ''कार्टून'' की उत्पत्ति इतावली भाषा के शब्द कार्तोने और डच भाशा के कारटों से हुई है जिसका मूल अर्थ होता है– ''मजबूत कागज पर खींची गई वह परिकल्पना जो एक अध्ययन के रूप में किसी बड़े चित्र के लिए बनाई गई हो, खासकर फ्रेस्को चित्र के लिए।'' कार्टून या व्यंग्यात्मक चित्र का दूसरा अर्थ भी है–''राजनैतिक अथवा सामाजिक घटना पर अतिशयोक्तिपूर्ण व्यंग्यात्मक समीक्षा।'' आधुनिक छापे–संदर्भो, हास्य, व्यंग्य की सर्जना करने के उदेश्य से बनाये जाने वाले रेखांकनों और चित्रों के लिए कालांतर में ये शब्द रूढ हो गया। 1773 में ''पंच'' ने राजनैतिक

व्यंग्यात्मक रेखांकनों का यह सिलसिला चालू किया था। भारत में कार्टून या हास्य, व्यंग्य, कला की शुरूआत ब्रिटिश काल में मानी जाती है और केशव शंकर पिल्लै जिन्हे ''शंकर'' के नाम से जाना जाता है, को भारतीय कार्टून कला का पितामह कहा जाता है।

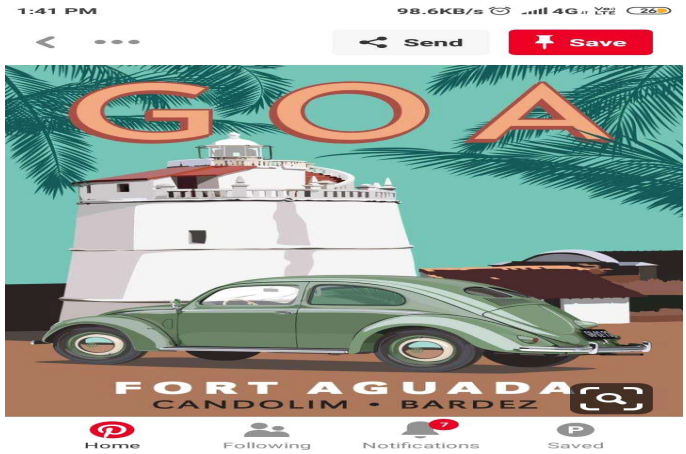

के0 शंकर पिल्लै ने 1932 में हिन्दुस्तान टाइम्स में कार्टून या हास्य, व्यंग्य चित्रांकन करना प्रारम्भ किया। 1946 में अनवर अहमद हिन्दुस्तान टाइम्स में हास्य व्यंग्य चित्रकार शंकर की जगह नियुक्त हुए।[4] शंकर के बाद भारत में हास्य, व्यंग्य चित्रकारों का विकास निरन्तर होता गया और आज भारत के हर प्रान्त और भाषा में कार्टूनिस्ट (हास्य, व्यंग्य चित्रकार) काम कर रहे हैं। शंकर के अलावा आर0 के0 लक्ष्मण, कुट्टी मेनन, रंगा, मारियों मिरांडा, अबू अब्राहम, मीता रॉय, सुधीर तैलंग और शेखर गुरेरा आदि ऐसे नाम है, जिन्होनें हास्य, व्यंग्य कला को आगे बढाया है।

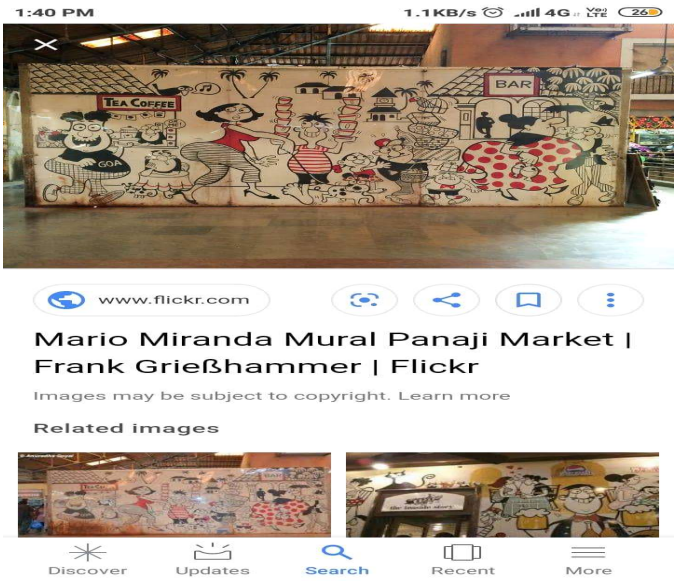

कार्टूनिस्ट या व्यंग्य चित्रकार उस

व्यक्ति को कहा जाता है जिसके चित्र हास्य या व्यंग्य पर आधारित होते है। कार्टूनिस्ट अपने चित्रों या कार्टून में व्यक्ति विशेष के चेहरे, हाव–भाव, चरित्र, वेश–भूषा, कथानक और संवाद के माध्यम व्यंग्य या हास्य का समायोजन करता है। कार्टूनिस्ट को कई श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जैसे समाचार पत्र या पत्रिकाओं में कार्य करने वाले राजनैतिक कार्टूनिस्ट या सम्पादकीय कार्टूनिस्ट तथा एनिमेशन फिल्मों के लिए कार्य करने वाले कार्टूनिस्ट। आज प्रायः हर अखबार और पत्रिका ससम्मान हास्य, व्यंग्य चित्रों को प्रकाशित करती है, क्योकि पाठकों का सबसे पहले ध्यान आकर्षित करने वाली सामग्री में हास्यात्क, व्यंग्यात्मक चित्रों की परम्परा सी बन चुकी है, क्योंकि इस प्रकार के चित्र अभिव्यक्ति भावों को और अधिक प्रभावशाली ढंग से सम्प्रेषित कर पाते है। अधिकांश हास्य, व्यंग्य चित्रकार राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, विद्रुपताओं पर अतिशयोक्तिपूर्ण हास्य, व्यंग्य प्रहार अवष्य करते है। हास्य, व्यंग्य चित्रकार नित्य प्रतिदिन की अखबार में छपने वाली घटनाओं अथवा जाने पहचाने राजनेताओं पर हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक रेखाचित्र बनाते है।

हास्य, व्यंग्य चित्रों में अक्सर कैरीकेचर अर्थात् उपहास चित्र या हास्य चित्र का भी प्रयोग होता है जिसका अर्थ ''जिसमें एक ऐसा प्रतिनिधित्व चित्रमय वर्णन है। विशेष रूप से इस बारे में विचार किया जा सकता है कि किसी व्यक्ति या वस्तु के बारे में जो सामान्य रूप से पसन्द किया गया हो, उसे ठीक नही किया जा सकता अर्थात् उपहास चित्र या वयंग्यात्मक चित्र किसी व्यक्ति का बनाया जाता है। हास्य, व्यंग्य चित्रों में चित्रित आकृति की शक्ल–सूरत को इस प्रकार बनाया जाता है कि वह पहचान में तो आये परन्तु इस प्रकार अतिशयोक्तिपूर्ण बढा–चढाकर या घटाकर बनाए जाए कि वह बेतुकी तथा हास्यापद दिखे इसमें व्यक्ति या वस्तु की सुन्दरता गौण कर दी जाती है किन्तु उसकी विलक्षणता तथा खराबियॉ उभार दी जाती है। इसी विलक्षणता एवं बेतुकी षक्ल की वजह से ही इस कला ने कलाकरों को और दर्शको को अपनी ओर आकर्षित किया है। हास्य, व्यंग्य चित्र कार्टून पोस्टर, इलस्टेशन सभी एक प्रकार के चित्र ही है जो चित्रकला की एक विशिष्ट शाखा का परिचय देते हे।

आधुनिक चित्रकला में हास्य, व्यंग्य चित्राकारों की शैली का दायरा अलग–अलग तकनीकों में देखा गया है, क्योंकि प्रत्येक कलाकार की अपनी स्वतन्त्र शैली है, यह आधुनिक काल तक सीमित नही रहा इससे पहले भी हमें इस शैली के नमूने प्राप्त हुए है जो कला इतिहास का एक हिस्सा है जो हमारे वास्तविक जीवन जैसे बच्चों की कला, अनपढ व्यक्ति की कला, आदि वासियों की कला, ग्रामीण लोक कला आदि का सम्बन्ध देखा जाए तो हास्य, व्यंग्य चित्र शैली के अन्तर्गत है, जिन्हे देखकर मन में एक अलग अभिव्यक्ति का निर्माण होता है लेकिन समय–समय पर इन सभी में परिवर्तन हुआ है, जैसे स्टेन ग्लास या टेपेस्ट्री पर चित्रांकन या रेखांकन करने के लिए बहुत मोटे कागज पर चित्रांकन या रेखांकन हुआ है और इसके ही साथ भिति चित्रों में भी इस माध्यम का प्रयोग है, इनमे अन्तर्गत भारत के ही कलाकारों ने कार्य नही किये बल्कि हमारे प्रसिद्ध पाश्चात्य कलाकार राफेल और लियोनार्दो दा बिन्ची ने भी अपनी कला शैली में हास्य, व्यंग्य तकनीक का इस्तेमाल किया है जिससे स्पष्ट है कि कला प्रत्येक प्रान्त,

प्रत्येक भाषा प्रत्येक नगर, शहर अथवा ग्रामीण क्षेत्र में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है बल्कि हम अपनी दिनचर्या में अनेको काम ऐसे करते है जो हास्यास्पद होते है और कलाकार इसी दायरे को साक्षात्कार कर लेते है जो वर्तमान का रूप है इसी मानव जगत का यथार्थ बहुत तेजी से बढा रहा है।

भारतीय आधुनिक कला तीव्र गति से बहती हुई एक विचारधारा के समान है जिसमें अनेकों विचारधाराऍं बहती है जो भिन्न–भिन्न प्रान्तों से होती हुई एक विशाल रूप धारण करती है जिनमें प्रत्येक विचारधारा का अपना एक सहयोग होता है। उसी प्रकार भारत वर्ष में भी अनेकों विद्वानों, कला इतिहासकारों, कला समीक्षको, आलोचकों के विचारों व भावनाओं का सहयोग है भिन्न भिन्न शैलियों है जो मानव जीवन के पहलुओं का स्पर्श करती है और उनकी अभिव्यक्ति में एक नई सोच प्रदान करती है। भारत देश किसी एक परम्परा पर आधारित नहीं, अपितु यहॉ अनेको परम्परायें है और सभी का आदर–सत्कार किया जाता है इतिहास का दायरा प्राचीन है, प्रत्येक देश का अपना इतिहास है और वह अपने इतिहास को बनाये रखना चाहता है, लेकिन आधुनिक युग में यह परम्परा गौण है, क्योंकि मानव जगत सदैव एक नई दिशा और दशा की आशा करता है। नये विचारों की ओर स्वतन्त्रता का स्मरण चाहता है। वह चाहे किसी भी क्षेत्र से हो, प्रत्येक क्षेत्र में मानव लगातार तेजी से परिवर्तन कर रहा है।

आधुनिक युग के कलाकार का क्षेत्र अपने दायरे में है, वह अपनी अन्तरात्मा से अपने विचारों को प्रकट करता है। आधुनिक युग में कलाकारों के अनेकों माध्यम रहे, शैलियॉ रही, अनेकों तकनीकें रही, किसी ने लकडी पर कार्य किया, किसी ने जमीन पर, किसी ने धातुओं पर, कागजों पर किसी ने रंगो से अपने विचार प्रकट किये किसी ने रेखांकनों द्वारा किसी ने डिजिटल माध्यम अपनाया पर अपनी स्वतन्त्रता को उजागर किया, यह एक नई पहल है। आधुनिक युग के कला क्षेत्र में एक माध्यम रेखांकन का है, जिसमें हास्य, व्यंग्य चित्रांकन है जिसे सीधी सी भाशा में हंसी–मजाक कहते है, जिसे देखकर दर्षक के मस्तिष्क में एक अजीब सी तस्वीर का समावेश होता है और वह आनन्दित हो जाता है। आज आधुनिक युग में हास्य, व्यंग्य (कार्टून) शैली का दायरा इतना बडा हो गया है कि यह देश–विदेशों में काफी संख्या में इनसे सम्बन्धी विचारधाराओं वाले हास्य व्यंग्य कलाकारों की उपज हो रही है जिनकी विचारधाराएं कोई बच्चा भी कर सकता है। यह मानव जगत को एक वरदान के रूप में मिली है। क्योंकि मानव जगत

परिवार के लिये यह कला बहुत आवश्यक है, इस कला शैली का फायदा कला क्षेत्र तक ही सीमित नहीं है, यह कला शारीरिक व मानसिक रोगों को भी दूर करती है और अन्य क्षेत्र जैसे टी0वी0 सीरियल, विज्ञापन, होर्डिंग्स, चलचित्र आदि। यदि हम ध्यान दें तो यह प्राचीन कला की देन है या बच्चों की कला की देन है, जिसका अब बहुत बडा क्षेत्र है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने विचारों को प्रकट कर सकता है सिकी भी क्षेत्र में किसकी भी माध्यम में देखा गया है कि यह कला मानव जीवन को एक रोजगार भी प्रदान कर रही है। यह कला एक समकालीन कला का स्वरूप है जिसमें अपने विचारों की अभिव्यक्ति एक स्वतन्त्र माध्यम है। इसके अन्तर्गत किसी विशेष वस्तु का ही ध्यान रखा जाता है। इसके अन्तर्गत कला तत्वों का सामवेश नही है।

आज हास्य–व्यंग्य चित्रांकन के अन्तर्गत फिल्म जगत, केन्द्र संस्थाएं, काम कर रही है, जिनका क्षेत्र काफी विस्तृत है। वर्तमान में फिल्म जगत की अहम भूमिका है। फिल्म जगत में चित्रण या पोस्टरों से दर्शको को आकर्षित किया जाता है और फिल्म के माध्यम भी अलग–अलग है। जिस प्रकार कला जगत में फिल्में, हिंसाप्रधान फिल्में, प्रेमप्रधान फिल्में, सामाजिक फिल्में, राजनीतिक फिल्में, पारिवारिक फिल्में, डॉक्युमेन्ट्री फिल्में, टेलीफिल्में एनिमेशन (गति कला) और कार्टून फिल्म, विज्ञापन फिल्म आदि। यहॉ जो फिल्मों के माध्यम दिये गये है इन सभी को हम हास्यास्पद रूप में प्रस्तुत कर सकते है लेकिन मानव जगत की सीमा को लांघ नही सकते। एक वास्तविक जीवन की भी अहम भूमिका होती है, इसी दायरे को ध्यान में रखकर कुछ जगह ही परिवर्तन किया जा सकता है ताकि कुछ समय के लिये दर्शकों को हंसी मजाक की रसानुभूमि हो सकें।

आज फिल्म जगत में हास्य, व्यंग्य (कॉमेडी फिल्में) फिल्मों का योगदान काफी क्षेत्र में फैल चुका है और हिन्दी भाषा में बडे पैमाने पर बनी रही है। इन फिल्मों का उद्देश्य मानव जगत या दर्शकों को मनोरंजन कराना होता है। इन फिल्मों को वास्तविकता से जोडा जाता है और इन फिल्मों का बनाना बहुत कठिन होता है। इन फिल्मों में रोजमर्रा की जिंदगी के अनुभव, घटनाओं तथा विषय के माध्यम से हास्य निर्माण होता है और फिल्म के चरित्र भी हास्य निर्माण में अपना योगदान करते है। इन सभी का फिल्म में समावेश इस प्रकार से किया जाता है कि एक हास्य का भाव उत्पन्न हो सके। इसमें सभी पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। जिससे कॉमेडी फिल्में दर्शक पंसद कर सकें। इस प्रकार की फिल्मों से दर्शक व हास्य, व्यंग्य क्षेत्र में कार्य कर रहे आधुनिक भारतीय चित्रकार जीवन जगत के प्रत्येक व्यक्ति को रूबरू कराते है। हास्य–व्यंग्य क्षेत्र में एनिमेशन (गति कला) और कार्टून फिल्म का वर्तमान में प्रभाव बहुत अधिक देखा जा रहा है। एनिमेशन का प्रयोग बच्चों के दायरें को ध्यान में रखकर किया गया है। इन फिल्मों को बनाने में आधुनिकता का प्रयोग किया जाता है। एनिमेशन के अन्तर्गत काल्पनिक कथिाऐं, प्राचीन घटनाएँ आदि का समावेश करके एनिमेशन का निर्माण किया जाता है। इस प्रकार की फिल्में बच्चे–बूढे ज्यादा पसंद करते है। इन फिल्मों का प्रदर्शन टेलिविजन तथा सिनेमाघरों में होता है। वर्तमान में हिन्दी में एनिमेशन और कार्टून फिल्मों ने अपना स्थान बनाया है और बच्चों मे इनका ज्यादा आकर्षण देखा जा रहा है। वर्तमान में हास्य–व्यंग्य शब्दों का

जितना प्रयोग किया जाये, उतना ही महत्वपूर्ण हम रोजमर्रा की भागदौड में सब कुछ भूल जाते है और मानसिक स्थिति कुछ और या परेशानी से घिरी रहती है। हास्य–व्यंग्य चित्रकारों का अनुभव है कि वर्तमान में हास्य–व्यंग्य फिल्मों, विज्ञापनों, एनिमेशन, कार्टून, कार्टून फिल्मों आदि की मानव जीवन में आवश्यकता है जो काफी हद तक सिद्ध हुआ है।

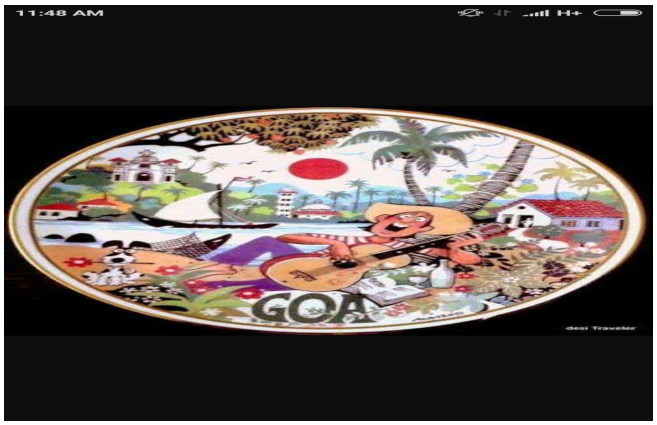

हास्य–व्यंग्य या कार्टून एक शब्दविहीन संवाद है तो कभी कुछ गिने–चुने शब्दों के सहारे बहुत कुछ कहने की कला है, वही यह आडी तिरछी रेखाओं के माध्यम से सम्प्रेषित होने वाला व्यंग्य है। कुछ लोग हास्य–व्यंग्य कला को उपहास मानते है या किसी का मखौल उडाने का जरिया। लेकिन वास्तव में कार्टून की मूल आत्मा व्यंग्य करना ही है जिसमें संक्षिप्त शब्दों की बैसाखी से हजारों शब्दों में लिखा जाने वाला समाचार व्यक्त किया जाता है। हास्य–व्यंग्य चित्र किसी भी रूप मं बुराई को जन्म नही देता है, बल्कि वह किसी भी अव्यवस्था, लापरवाही, अनदेखी, अनहोनी, परिणाम, प्रवृत्ति या योजनाओं, कुप्रभावों को रेखाओं द्वारा अंकन करते हुए हास्यात्मक, व्यंग्यात्मक एवं कलात्मक प्रस्तुत देने का स्टीक व आकर्षक माध्यम है। हास्य–व्यंग्य चित्रों को केवल मनोरंजन या अपने मन को प्रसन्न करने के उद्देश्य से ही नही बनाया जाता है बल्कि वह सच्चाई को यथार्थ के गुप्त रहस्यों या पहलुओं परिणामों और सम्भावनाओं को भी सम्मिलित करते हुए उसे समाज के सामने उजागर करते है।आज की पत्रकारिता अगर राजनीतिक डर व हाथकण्डों और बाजारवाद के डर से बचकर स्टीक, सच्चाई और निडर होकर सच्चाई को उजाकर करने की काबिलियत या गुण अगर बचा है तो वह हास्य–व्यंग्य या कार्टून पत्रकारिता ही है जो अपने बलबूते से पाठकों या दर्षकों को हंसाता है वहीं दूसरी और वही समाज में मस्तिष्क में प्रश्नों के बीज बोने का कार्य भी करता है। यदि सच कहा जाए तो पत्रकारिता के क्षेत्र में किसी विशेष घटना या बात पर समाचार नही बनाये जाते अथवा समाचार उस घटना को कहने में डरता या हिचकिचाता है लेकिन उसके विपरीत उसी घटना विशेष को हास्य–व्यंग्य बेखौफ होकर राजनीतिक सत्ता के गलियारों से लेकर शासन और प्रशासन से सीधे रूबरू होकर निडरता से कह डालता है। कार्टून या हास्य–व्यंग्य की इसी विशेषता के चलते इसे वेटलैस, डाइजेस्टिव और हिडन ट्रूथ टैलर अर्थात् भाररहित, पचने वाला और गुप्त सत्यवाचक भी कहा जाता है। प्रिंट मीडिया में हास्य–व्यंग्य चित्रों

का स्थान एक समाचार से भी अधिक सर्वोपरि माना गया है क्योंकि किसी भी अनसुलझे या जटिल समाचार या चर्चा के विषयों को पाठकों तक सहजा से पहुंचाने, समझाने या विचार–विमर्श कराने की क्षमता हास्य–व्यंग्य चित्रों में निहित है।

प्रसिद्ध हास्य–व्यंग्य कलाकार आ0के0 लक्ष्मण, हास्य–व्यंग्य कला को ''शिकायत करने की कला'' मानते है, अबू अब्राह्म का कहना यह है कि हास्य–व्यंग्य कला ''दुर्भावना रहित शरारत'' है, सुधीर धर ने हास्य–व्यंग्य कला को एक ''वाच डॉग'' कहते है जो सिर्फ भौंक सकता है परन्तु काटता नही है जबकि बाल ठाकरे ने हास्य–व्यंग्य कला को संदान यानि एन्विल पर विषय–वस्तु को रखकर लुहार की तरह पीटने के रूप में देखते है। आर0के लक्ष्मण के अनुसार एक कार्टून के सामान्य अर्थो के साथ समुदाय की सोच और हितों की सुरक्षा की कोशिश करता है। कार्टून (हास्य–व्यंग्य चित्र) स्वस्थ जुडाव और अच्छे मनोविनोद के साथ दुर्घटनारहित रहकर व्यक्तियों और मुद्दों से सरोकार रखता है। लक्ष्मण मानते है कि हास्य–व्यंग्य चित्रकार अपने चरित्रों के द्वारा हास्य का संचार करता है। जबकि वही पात्र उस हास्य के लिए माध्यम बनते है लेकिन अभिव्यक्ति नही करते यानि हास्य–व्यंग्य चित्रकारों द्वारा चित्रित हास्य किरदार की सहायता से दर्षकों की छोटी सी मुस्कान बन जाता है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि मानव जब से पृथ्वी पर जन्मा है, वह कुछ न कुछ खोज में लगा है जबकि उसके क्षेत्र उसकी षैली में अलग–अलग अभिव्यक्ति है जिससे वह अपने आप को आत्म सन्तुष्टी प्रदान करता है और कला क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा इसमें भी क्रमबद्ध परिवर्तन है। आज आधुनिक काल में चित्रकार वह चाहे देश का हो या विदेश का वह हर क्षेत्र में कुछ नया कर रहा है। वर्तमान मानव जीवन का संज्ञान लेते हुए कुछ चित्रकारों ने आधुनिक काल में हास्य, व्यंग्य चित्रांकन किया जिसकी अलग तकनीक है। यह चित्रांकन बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक को हास्सपद भाव प्रदान करती है जिसके माध्यम से हास्य, व्यंग्य कला कार्यरत कलाकार समाज में पनप रही अवसाद, परेशानियों व अनेक प्रकार के दुःख दुविधाओं में फँसे मानव को तनाव मुक्त करने का साधन है। हास्य, व्यंग्य कला का प्रयोग आज वर्तमान में सभी बुद्धिजीवों और व्यापारिक दृष्टिकोण में काफी हद तक हो रहा है, जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, विज्ञापन, चलचित्र और राजनीतिक विषयों पर आदि में देखा जा रहा है और यह विषय भारतवर्ष और अन्य देशों की कला का ही नहीं मानव जीवन का भी हिस्सा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 जैन गुलाब चन्द, *भारतीय चित्रकला एवं शिक्षण सामग्री*, इण्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, पृ0 सं0 **11**

2 शर्मा लोकेश चन्द्र, *भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास,* गोयल पब्लिकेशन हाऊस मेरठ, 2005 पृ0 सं0 **40 व 43**

3 शर्मा लोकेश चन्द्र, *भारत की चित्रकला का संक्षिप्त इतिहास,* गोयल पब्लिकेशन हाऊस मेरठ, 2005, पृष्ठ सं0 **68**

4. कार्टून कला और कलाकार विकिपीडिया, http://hi.inwikipedia.org.